



॥ अकिं च मोघं सैतं नै स्मरयति ॥ अथर्वं समक रयवसायं राखम पुन मूलम् ॥ यन्म गद्य क्वा व

[illegible]

भाद्ययार्गनामानं लोकनार्थनमामि ॥ ० ॥ वृद्धमलुल ॥ ॐ वैष्णवनाथकजयूथीयुनिष्ठस्वाहा ॥ म
 ध्य ॥ ॐ श्रार्यश्राल्याय ॥ ६ ॥ ॐ श्रार्यनलसंगवाय ॥ ख ॥ ॐ श्रार्यश्रमिनाशाय ॥ थं ॥ ॐ श्रार्यः
 श्रमाद्यसिद्धाय ॥ जव ॥ ॐ श्रार्यलावना
 लुलाय ॥ ७ ॥ ॐ श्रार्यगालाय ॥ ८ ॥ ॐ श्रार्य
 वसीसाननीनं धानं गीनवनं सकजगु
 कलूकदलकामलाशदिवर्जं नवदगाश्रसिंदयमिमिसिन्मासर्वकालीनमामि ॥ ० ॥ धनरविकन ॥ भा
 दमवनामा ॥ जियनिमनासद्रिथहन ॥ नवदगिगाल्यय ॥ थधर्मसलयवासीवया ॥ ० ॥ मंदिवसमूया

अथ सवित्रवर्कः

五

५ वडा र्थे विम सं लारु ॥२

कायः ॥ स्वका ॥ ॐ शार्ङ्गनाथगणेशकायः ॥ स्ववर्ध ॥ ॐ शार्ङ्गललितविस्मयायः ॥ जवर्ध ॥ ॐ शार्ङ्ग
 यस्मिन्पुण्यरुसाकनायः ॥ जवका ॥ यस्मिन् ॥ यासर्वज्ञानयत्नयसर्म सान्नेषिणभवका मायाः
 गस्थेष्टववाधिसत्त्वगजिनवृद्धस्यमान
 दन ॥ जवदगिना ॥ धर्मोयस्वसमस्ती ॥  नमः ॥ सादभननामा ॥ जियनिसनामद्विध
 व ॥ यावदाधिनियतुनाम ॥ (ग)नाथ ॥ भव ॥ म्मादिवसमूयादाय ॥ धगुदिदिवसलाहा
 यनिधर्मसकसन्नगच्छादन ॥ विनागनामस्य ॥ नागध्वजभाहादिनभालभाडहिमथायस ॥ ० ॥
 सीधर्मोयस्व ॥ ॐ शार्ङ्गावलाकिनभवनायवजपुष्पयुनिवृत्ताहा ॥ मध्य ॥ ॐ शार्ङ्गमेवय ॥ ६ ॥ ॐ शार्ङ्ग

X वैजयंतिमलखाला ॥

३

गगनगङ्गाय ५॥ स्व ॥ ॐ श्रार्यसमन्त रुडाय ५॥ थं ॥ ॐ श्रार्यवज्रयानय ५॥ ड ॥ ॐ श्रार्यमैश्रधाय ५॥
 स्व ॥ ॐ श्रार्यसर्वनिवर्तनविष्कसितं ५॥ स्व थं ॥ ॐ श्रार्यकिमिगङ्गाय ५॥ ड थं ॥ ॐ श्रार्यस्वगङ्गाय ५॥
 ॥ ड का ॥ ॥ यं मुनि ॥ वृद्धनमामिगङ्गाय ॥ यद्ययालि मैश्राल्मर्क गगनगङ्गाय ॥ यकाधि
 यं यवदिगीघटमैश्रधायं विष्कसितं कि ॥ ॐ श्रार्यमैश्रधायं ॥ ॐ श्रार्यमैश्रधायं ॥
 नामद्रिथठन ॥ नृपदगिगाययं ॥ थय ॥ ॐ श्रार्यमैश्रधायं ॥ ॐ श्रार्यमैश्रधायं ॥
 लाघव थदिन कूड ॥ जावदा ॥ ॐ श्रार्यमैश्रधायं ॥ ॐ श्रार्यमैश्रधायं ॥
 लिंकवाधिसत्त्व ॥ नथगनदाका ॥ सयगनर्गगङ्गाय ॥ ॐ श्रार्यमैश्रधायं ॥ ॐ श्रार्यमैश्रधायं ॥

३

गगनगङ्गायाडकिमगनससक ॥ ॐ ॥ समन्तादूर्ध्वमा ॥ एकचिह्नं जयनिसनामद्रिथठन ॥ दगदि (श्रोक
 धाउंसनियमिगा ॥ दगदिगलाकधाउस विष्ककटा ॥ वृद्धारगवका ॥ नथगनदाका ॥ वाधिसत्त्व ॥ वा
 धिसत्त्वदाका ॥ श्रावाथो ॥ गुबुलाउ ॥ या ॥ ॐ श्रार्यमैश्रधायं ॥ ॐ श्रार्यमैश्रधायं ॥
 नामद्रिथठन ॥ यन् ॥ ॐ श्रार्यमैश्रधायं ॥ ॐ श्रार्यमैश्रधायं ॥
 ॥ शविदनयाहायाये वचननयाहाया ॥ ॐ श्रार्यमैश्रधायं ॥ ॐ श्रार्यमैश्रधायं ॥
 वाधिसत्त्व आदिन ॥ मागायिगत्रो ॥ मास ववृ ॥ नदन्त्यानसंगन्य ॥ नायलावकाव ॥ ॐ श्रार्यमैश्रधायं ॥
 रगवान्कवयू ॥ थजत्तसयाहायाये ॥ ॐ श्रार्यमैश्रधायं ॥ ॐ श्रार्यमैश्रधायं ॥

३

कर्मद्वर्ग ॥ धर्मया हाथशत्रु ॥ काचिर्नवा रुधु ॥ गविदनया हाथशत्रु ॥ नत्सर्वमकथायिउचित्वा ॥
 धर्ममर्त्यार्थं विद्या हाव ॥ गलमूनकाव ॥ ^{उल्लापयकाय} उल्लापित्वा ॥ सर्ववृद्धवाधिसत्त्वा ॥ समस्तगथागनवाधि
 सत्त्वादिन ॥ नामाचार्यस्थानिक ॥ गुनु ॥ शान्तयाधा आदिन ॥ अग्रयावचया ॥ रुधुननया
 व ॥ यवचययुनिदभाया ॥ शिनकीयसु ॥ रुयाहन ॥ जाननसमव ॥ सस्यमसस्ययाहायाः
 य ॥ युनिद्वयादयामि ॥ सनकाकनजय ॥ नीस्यधर्मगायार्थभावननग ॥ ॥ समन्वाह
 नरुदन ॥ शयोअरुनी ॥ एकमनयाहन ॥ शशिष्टास्रद्वकशकलीग ॥ धशत्रुसा ॥ धडयावधधर्म
 यावजीव ॥ जिवनवहनयगा ॥ याधनियार्ग ॥ स्यायस्यायमगव ॥ युनिविनगा ॥ मयगन ॥

४

निरुनदधु ॥ दधुआदिनजानमगव ॥ निरुनगफा ॥ गतुआदिनुयदानयायमगव ॥ लर्जिनदया
 वन ॥ समस्तयालियाक दयादमान ॥ सर्वसत्त्व ॥ समस्तसत्त्व ॥ आदिन ॥ यागिरुगम ॥ यागिज
 नसजिवनवहनयका ॥ अरुसकन ॥ यिथीलिकामूयादाय ॥ कनजायनयू यिमूनि
 सीयानिआदिन ॥ धनिया ॥ जिवकार्यम ॥ यनग ॥ उर्व्वार्द ॥ धमयुकाव ॥ एकमनयाह
 न ॥ मर्वलीमूयादाय ॥ धगुलिदि ॥ वगलाहाव ॥ यावचवागीममिणी ॥ धनूयावादि
 वहाव ॥ यावगसूयोदयानन ॥ कनसया सूर्येगा ॥ मनुवनलहा ॥ याधनियार्गयुदाय ॥ स्यायस्या
 य ॥ याधनियार्गान् ॥ विरुनासावथ ॥ युनिविनमालि ॥ जयनिमयगन ॥ निरुनदधु ॥ दधुजानजय

यनिमयगव ॥ निरुतगत्ता ॥ गुरु आदिनयदायय जयनिमयगव ॥ लज्जि नादयावत्सु ॥ सर्व
 सत्वषु ॥ समस्त सत्वर्जनयनि आदिन ॥ यालिखु भव ॥ जिवाज्यु जिवनवहनयका ॥ अनुक
 यिपीलिकामूयादाय ॥ कजनजायल यका यिमूनि सीयानि आदिन धनितास्यायमनग
 न ॥ नर्वभवा ॥ नकमनयाहन निश्चयन युधर्मेनीलगने ॥ रुवनिस्थिया ॥ नर्वा मायामहर्वा
 ॥ अभा धडधावध धर्मदने ॥ शिष्टा मनुगिष्ट ॥ शिष्टा द्विर्धन ॥ अनुविधायन ॥ द्वि
 र्ध विधानयाय ॥ अनुक लामि ॥ द्विर्धन कर्म याय ॥ ० ॥ यूनवयव ॥ रुमाह ॥ समन्वाहन ॥ नक
 मनयाहन ॥ रुवक ॥ शास्त्रि धर्मनिसकस्य ॥ शर्यो अर्ह नायावजीवे ॥ धाडधावध धर्मस जीव

नवहनयभाल ॥ अदरुत दाने ॥ भवतमननक विया धनकायमनव ॥ अत्रुक्तवर्ग ॥ अनावाविश्यमन
 व ॥ मृषावाद ॥ असत्यवज्ञायमनव ॥ सुनाभेय मययमादरुतने ॥ ध आदिन कायकजाय जयनीम
 यगव ॥ नृस्यगामवादिन ॥ यारवन भदाय वाजन धाय ॥ माला गन्धनूयन ॥ त्वाकस्वानुयन
 भाकावयन ॥ वधुकरु वल ॥ धाना यमा लनगीय ॥ धावनडवैगयन मदासयन ॥ धनय त्वा
 ना धीदान यलकी गायव आगनभाधान ॥ अकानशाजनयदाय ॥ सुयल्वि अष्टमशनदावतम
 गव ॥ धर्मलिनधाय ॥ धजयनिमयगव ॥ अकानशाजना ॥ सूर्य अष्टमशनदाव यावनयार्थ जिय
 ती ॥ यमिविनता ॥ स्थिगाननलग ॥ ० ॥ अहमवार्ह ॥ जयनिस्थि नकमनयाहाव ॥ अनुकनामा ॥ ५

३

यनिसनामद्विधन ॥ ॐ मीवर्षी मूयादाय ॥ ध्वगुडिदिवसलादाव ॥ यावन् नारीगामीनि ॥ धनूयावा
निर्वदाव ॥ यागसुखादयान्न ॥ कनसयासूर्यत्वं मनुवन्दहा ॥ अदरुदात ॥ मवूयावन काक सु
क ॥ अवमवय ॥ जूनावालिशय ॥ मृः ॥ स्वायार्द ॥ असह्यवहाय ॥ सूनामैत्रय मययुमोदस्त
नी ॥ ध्वगाहन कायकीजाय ॥ ॥ नृत्य गान वादिन माला ॥ व्यावन भद्रान वजनथा ॥ ६
यत्वाकस्तान्दुय ॥ गंधनूययल ॥ नः ॥ साकान लयनयाहन जाय ॥ वलुक रुवण ॥ धगाः
यनाल्लगीया ॥ धावन उच्च गयन महागयन ॥ स्वाका ईदालयनीकी गाथाव आसन सधान ॥ अकाः
लशाउनयदाय ॥ सूर्यत्वं अक्षमशनदाव यावन जाय मयव ॥ अकाव राजना ॥ सूर्यत्वं अक्षमशन

दावयावनयायज्ञवसर्ग ॥ ध्वनिविनमानि ॥ ध्वगजयनीसीभाउमत्रग ॥ अननार्द ॥ ध्वगजयनिस्त्री
अक्षभर्तागन ॥ आता अगल ॥ कर्षा माया मर्दनी गिष्ठी ॥ ध्वगन ध्वडयावधधमो जयनिस्त्री गिका ॥ म
नूगिष्ठी ॥ क्रीर्धसन ॥ अनूविधियन ॥ द्वि ॥ ध्वनिविनयाय ॥ अनूकनामि ॥ द्विर्धकर्मयागग ॥ ०
ध्वनलिअर्घविय ॥ उंसन २ गिनि २ कन ॥ १ यव २ रुव २ दादाही २ ई ई ॥ उंकावव कवगधन २
ध्वनि २ ध्वन २ गन २ मन २ वन २ नगिः ॥ सरुसयमिमलिगगजीन कन २ गय २ रुगवन् साः
मादित्य यमवन्न कवल वधुधनद मविधवगलाय विनयनयाय अर्घयमिद्ववदाय स्वाहा ॥ ०
वनकाग ॥ सन २ रुल २ रुगवन्धन २ समयमनुस्मन ई २ रुट २ स्वाहा ॥ ० ॥ ध्वनसि नियवृक्षान

वनिवियक ॥ डं अभाद्योगागदौ ॥ सर्वदुख समयमु
कानी ॥ गान्धियुष्टिनकाकूर्धनुस्वस्ति स्वाहा ॥ यं मुनि
ननार्क ॥ ॥ अवन दृगकगिस्व ॥ भालसिबलसमादान
मगतस्यनया ॥ कथागमोरुवयमर्ह ॥ आववयिवनः
मत्व आदिन ॥ विद्यावनलसंयन्न ॥ सुगमालाकविदनु

三

॥ गाल सर्वत्र समादान ॥ शिव सर्वत्र याह्याह धर्म
लं काल शयुव ॥ विरुय विष्ठा नाथ ॥ वृग कल गभ
थागरी वृक गयिव ॥ सर्व सत्त्वानी ॥ समस्त सत्त्वजन
पदथ ॥ गधगन सक सीयाक वायुव वृक नसी रना
माफा ॥ ०६६०३३० ॥ ७८ ॥ ॥ ०६६०३३० ॥

6

চনিম

पत्रित्वे २

ॐ नमः श्री पद्मनृत्त्यंश्वराय ३ ॥ रस्यवक्त्रा लुखलुं गदवविगजिरु लानकाभनृगं गजाम्बुदिक्रव
वाळयरु गिनगगर्लं गच्छ काकाशंशं मरु (ओ लब्ध वन्दान रत्नसलिल सन्नितागर्वगा पु
वैवा रुसाहृत्तयया नै नवउरगव गयन्नृत्त्यंश्वराय ३ ॥ अविच ॥ यासासंसावच
क विनचयतिमनः सन्निधागन्मरु गोः साधियोस्यसादादिशुभुनिज्जुर्वस्वामिना
निश्चयैव गच्छयत्यात्मवेद्यं समुदय तिस्र्यै कल्याणात्ममूर्कं कुर्यात्तुष्टिद्योधि यद्गंजि
नसिचविनयै सद्गुर्न सत्वेकार्त्त ॥ २ ॥ अविच ॥ यथाश्चेत्तुजकाटिकाटिवितट यद्गवृनिस्थात्स
दे यथाकर्मभूयानर्त्तपटंगया (शलीरि विद्धिया। क्षामिष्मनत्वायवायनकसि किन्नस्यवि